आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:08-01-15

हम भाग्यशाली आत्माओं को आत्मा, परमात्मा और सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अन्त का सारा ज्ञान देकर मास्टर ज्ञान सागर बनाने वाले, बेहद के ज्ञान सागर बाप ने कहा, मैं जो हूँ, जैसा हूँ, ऐसा कोई मुझे मुश्किल ही याद कर सकते हैं. जैसे बाप बिन्दु है वैसे बच्चे भी बिन्दु है. अपने को आत्मा समझे और बाप को भी बिन्दु रुप में याद करें, इसमें मेहनत है.

बाबा हमें हर मुरली में तीन बातों का ज्ञान देते है - आत्मा, परमात्मा और सृष्टि चक्र रुपी ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान. बाबा हमें आत्मा, परमात्मा का ज्ञान इसलिए देते है जिसे हम स्वयं को आत्मा समझ कर परमात्मा को याद करने का पुरुषार्थ करें. इससे ही हमारी आत्मा पतित से पावन बनती हैं. बाबा हमें सृष्टि चक्र के ड्रामा का ज्ञान देते है जिसे हम आत्मा ये दैवी-गुण धारण कर माया पर विजय प्राप्त करने का पुरुषार्थ करें.

बाबा की आज की मुरली से आत्मा-परमात्मा पर कहे गये महा-वाक्यों को स्वयं की आत्मिक स्थिति बनाकर परमात्मा की याद में पढ़ेंगे -

- बाबा कहते है मुख्य है ही आत्मा और परमात्मा की बात. मनुष्य आत्मा को ही नहीं जानते तो फिर परमात्मा को कैसे जानेंगे. कितने बडे विद्वान, पंडित आदि हैं, कोई भी आत्मा को नहीं जानते. अब तुमको मालूम पड़ा है कि आत्मा अविनाशी है, उसमें ८४ जन्मो का अविनाशी पार्ट नूंधा हुआ है, जो चलता रहता है. आत्मा अविनाशी तो पार्ट भी अविनाशी है.

- बाबा कहते है अब तुम जानते हो इस बाप के रचे हुए यज्ञ में यह सारी दुनिया स्वाहा होनी है इसलिए बाप कहते हैं देह सहित जो कुछ भी है यह सब भूल जाओ, अपने को आत्मा समझो. बाप को, शान्तिधाम को, और स्वीट होम को याद करो.

- बाबा कहते है अभी तुम ज्ञान से तो भरपूर हो. बाकी सारी मेहनत है याद में. जन्म-जन्मांतर का देह-अभिमान मिटाकर देही-अभिमानी बनें, इसमें बड़ी मेहनत है. कहना तो बड़ा सहज है परन्तु अपने को आत्मा समझें और बाप को भी बिन्दु रुप में याद करें, इसमें मेहनत है.

- बाबा कहते है वन्डर ऑफ दी वर्ल्ड तो बाबा है, जो फिर रचते भी स्वर्ग हैं, जिसको हेविन या पैरेडाइज कहते हैं. उनकी कितनी महिमा है, बाप और बाप के रचना की बड़ी महिमा है. ऊंच ते ऊंच है भगवान. ऊंच ते ऊंच स्वर्ग की स्थापना बाप कैसे करते है. बाप को ही ज्ञान का सागर, शांति का सागर कहा जाता है.

- बाबा कहते है सबजैक्ट तो एक ही है. मनमनाभव और मध्याजिभव या अल्फ़ और बे या याद और ज्ञान. अभी शिवबाबा तुम्हें ब्रह्मा द्वारा यह २१ जन्मो का वर्सा दे रहे है. बाबा की आज की मुरली से सृष्टि चक्र के ड्रामा पर कहे गये महा-वाक्यों को स्वयं की आत्मिक स्थिति बनाकर परमात्मा की याद में पढ़ेंगे.

- बाबा ने कहा, मनुष्य तो समझते है भगवान बडा समर्थ है वह जो चाहे कर सकते है. लेकिन बाबा कहते मैं भी ड्रामा के बन्धन में बंधा हुआ हूँ. भारत पर तो कितनी आफ़तें आती ही रहती हैं फिर मैं घडी-घडी आता हूँ क्या? मेरे पार्ट की भी लिमिट है. मेरा पार्ट कल्प के अन्त में ही खुलता है जब की भारत बहुत कंगाल, दुखी हो जाता है. यह है हाइएस्ट बाप की रीइनकारनेशन. फिर आते है नम्बरवार, कम ताकत वाले.

- बाबा कहते है अभी तुम बच्चों को बाप से नॉलेज मिली है जो तुम विश्व के मालिक बनते हो. तुम्हारे में फूल फोर्स की ताकत आती है. पुरुषार्थ कर तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बनते हो. औरों का तो पार्ट ही नहीं हैं. मुख्य है ड्रामा जिसकी नॉलेज अभी तुमको मिलती है.

- बाबा कहते है भारत ही नम्बरवन प्योर था. बाप पहले-पहले भारत में ही आकर प्योरिटी स्थापन करते है जो आधा-कल्प चलती है. बरोबर सतयुग में एक धर्म, एक राज्य था. फिर भारत और सारे विश्व में दैवी राज्य अब फिर से स्थापन हो रहा है. तुम जानते हो जो पूज्य आत्मा ये थी वही पुजारी बनी है. तुम्हें यह चक्र सदा याद रहना चाहिए.

ॐ शांति.